वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने संबंधी तृतीय वैश्विक रिपोर्ट

प्रमुख संदेश और कार्यकारी सार

United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

UNESCO Institute
for Lifelong Learning

वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने संबंधी तृतीय वैश्विक रिपोर्ट

वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने का स्वास्थ्य एवं कल्याण; रोजगार और श्रम बाजार; और सामाजिक, नागरिक और सामुदायिक जीवन पर प्रभाव

प्रमुख संदेश और कार्यकारी सार

United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

UNESCO Institute
for Lifelong Learning

यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर लाइफलांग लर्निंग
फेल्डब्रुननेनस्ट्राबे 58
20148 हैमबर्ग
जर्मनी

द्वारा 2016 में प्रकाशित

© यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर लाइफलांग लर्निंग

यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर लाइफलांग लर्निंग (यूआईएल) यूनेस्को का एक लाभ अर्जित न करने वाला अंतर्राष्ट्रीय संस्थान है। यह संस्थान आजीवन शिक्षा पर अनुसंधान, क्षमता निर्माण, नेटवर्किंग और प्रकाशन करता है जिसमें वयस्क और सतत् शिक्षा, साक्षरता और अनौपचारिक बुनियादी शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसका प्रकाशन शैक्षणिक शोधकर्ताओं, नियोजकों, नीति निर्माताओं और प्रेक्टिशनरों के लिए एक बहुमूल्य संसाधन है।

हालांकि यूआईएल के कार्यक्रमों को यूनेस्को के आम सम्मेलन द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार स्थापित किया गया है, संस्थान के प्रकाशन इसकी एकमात्र जिम्मेदारी के तहत जारी किए जाते हैं। यूनेस्को इनकी विषय-वस्तु के लिए जिम्मेदार नहीं है।

इसमें व्यक्त दृष्टिकोण, तथ्यों का चयन और विचार लेखकों के हैं और यह जरूरी नहीं कि ये यूनेस्को या यूआईएल के पदाधिकारियों से मेल खाते हों। इस प्रकाशन में उल्लिखित पद और प्रस्तुत सामग्री का अभिप्राय यूनेस्को या यूआईएली की ओर से किसी मत, जो कोई भी हो, की अभिव्यक्ति किसी देश या प्रदेश, या उसके प्राधिकारियों की कानूनी स्थिति से संबंधित या किसी देश या प्रदेश की सीमा का परिसीमन करना नहीं है।

फोटो
कवर:
बाएं से दाएं:
हीरो इमेजिस / गेट्टी इमेजिस
जी.एम.बी. आकाश / पैनोस
गियाकोमो पिरोज्जी / पैनोस
आईएनईए
एम. क्रोजेट / अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

डिजाइन
क्रिस्टियन मारवेकी

मुद्रण
अल्बर्ट शनैल जीएमबीएच

यह प्रकाशन एट्रिब्यूशन-शेयरएलाईक 3.0 आईजीओ (सीसी-बीवाई-एसए 3.0 आईजीओ) लाइसेंस के अंतर्गत ओपन एक्सेस के रूप में उपलब्ध है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/igo/)। इस प्रकाशन की विषय-वस्तु का इस्तेमाल करके प्रयोक्ता यूनेस्को ओपन एक्सेस रेपोजिटरी (http://www.unesco.org/open-access/termsuse-ccbysa-en) का प्रयोग करने की शर्तों को स्वीकारने से बंधा होगा।

प्रस्तावना

वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने संबंधी तृतीय वैश्विक रिपोर्ट (गराले III) स्थायी विकास एजेंडा 2030 के लिए अंतर्राष्ट्रीय सामुदायिक कार्यो के रूप में प्रकाशित की गई है। वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने का महत्वपूर्ण योगदान समाज के अनेक क्षेत्रों में क्या प्रभाव ला सकता है, को दर्शाने से मुझे विश्वास है कि यह रिपोर्ट नए वैश्विक एजेंडा में तेजी लाने के लिए एक कारगर माध्यम उपलब्ध कराएगी।

सभी तीनों गराले रिपोर्टें संदर्भ और परामर्शी दस्तावेज हैं जो विश्लेषकों और नीति निर्माताओं को जानकारी उपलब्ध कराती हैं तथा सदस्य देशों को बेलेम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन (बीएफए) के कार्यान्वयन की निगरानी में सहायता करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा पर छठे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2009 (कनफाइनटिया VI) में की गई उनकी प्रतिबद्धता की याद दिलाती है।

गराले III में, नीतिनिर्माता नीतियों, कार्यनीतियों और बजटों को समर्थन देने वाले उच्च गुणवत्तापूर्ण साक्ष्य पाएंगे। हितधारकों के लिए यह बहस का विषय होगा कि वयस्कों को सिखाना और पढ़ाना किस तरह स्थायी विकास को स्वस्थ समाज, बेहतर रोजगार तथा अधिक सक्रिय नागरिकता के लिए प्रोत्साहित करेगा। अनुसंधानकर्ता भावी अनुसंधान के लिए नए विषय और विचार प्राप्त करेंगे।

यह रिपोर्ट तीन लक्ष्यों से निर्देशित है: पहली, यूनेस्को सदस्य देशों के निगरानी सर्वेक्षण के परिणामों का विश्लेषण करना, और यह जायजा लेना कि क्या देश कनफाइनटिया VI में की गई अपनी प्रतिबद्धता को पूरा कर रहे हैं; दूसरा, वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने की प्रणाली को सुदृढ़ कराना, जिसके लाभ स्वास्थ्य एवं कल्याण, रोजगार एवं श्रम बाजार, और सामाजिक, नागरिक और सामुदायिक जीवन में परिलक्षित होंगे; तथा तीसरा, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर कार्रवाई करना।

गराले III में, बीएफए के सभी क्षेत्रों का कार्यान्वयन करने में देशों की रिपोर्ट की प्रगति का उल्लेख किया गया है। फिर भी, लगभग 758 मिलियन वयस्क ऐसे हैं जो एक साधारण वाक्य भी पढ़ या लिख नहीं सकते। इसमें 115 मिलियन लोगों की आयु 15 से 24 वर्ष के बीच है। अधिकांश देश 2015 तक वयस्क साक्षरता के स्तर में 50% सुधार प्राप्त करने संबंधी 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाए हैं। वयस्कों के लिए साक्षरता और बुनियादी कौशल प्राप्त करना अधिकांश देशों में उच्च प्राथमिकता रहा है, भले ही आय का स्तर कुछ भी हो।

स्त्री-पुरुष असमानता भी एक अन्य बड़ी चिंता का विषय है। स्कूल से निकलने वाले अधिकांश बच्चे लड़कियां होती हैं, दुनिया में 8.3% लड़कों की तुलना में 9.7% लड़कियां स्कूल नहीं जातीं। इसी प्रकार, अधिकांश (63%) वयस्क न्यून साक्षर कौशल प्राप्त महिलाएं होती हैं। शिक्षा मानवाधिकार और आत्म-सम्मान के लिए महत्वपूर्ण है और यह अधिकारिता के लिए एक प्रेरक शक्ति है। महिलाओं को शिक्षित करने का परिवारों और बच्चों की शिक्षा, प्रभावशाली आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और समाज में नागरिक प्रतिबद्धता पर गहरा असर पड़ता है।

आगे बढ़ने के लिए, वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने को सामूहिक, अंतर-क्षेत्रीय दृष्टिकोण बनाया जाना चाहिए। इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता है, जो गहन भागीदारी की तत्काल आवश्यकता द्वारा निर्देशित हों। हमें बोर्ड में सफलता के लिए शिक्षा के अनिवार्य महत्व के सभी क्षेत्रों को लगातार सूचित करना चाहिए।

वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने की निगरानी और मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है। चूंकि शिक्षा और अध्यापन प्राय: अनौपचारिक या औपचारिक क्षेत्रों में होता है, अत: इसका सही-सही पता लगाना कठिन हो सकता है। हमें अध्यापन के सभी रूपों का विकास और गहन निगरानी करनी चाहिए तथा निर्णय लेने के लिए और अधिक सही आंकड़े प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

नवम्बर 2015 में, 38वें यूनेस्को आम सभा में सदस्य देशों ने वयस्क शिक्षा (1976) की सिफारिश में संशोधन को मंजूरी दी थी। "वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने संबंधी सिफारिश (2015) नामक इस संशोधन से युवाओं और वयस्कों के लिए समान शैक्षिक अवसरों का विस्तार निर्देशित होगा। मुझे विश्वास है कि बीएफए और वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी सिफारिश, दोनों 2030 के शिक्षा एजेंडा के भाग के रूप में वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने को प्रोत्साहित करने के लिए ठोस आधार उपलब्ध कराएंगे।

2017 के प्रारंभ में, उच्च स्तरीय निर्णय निर्माता कनफाइनटिया VI की मध्यावधि समीक्षा के लिए एकत्रित होंगे। *गराले III* 2009 के बाद से बीएफए के कार्यान्वयन की समीक्षा की सूचना देगा। यह भागीदारों को 2030 एजेंडा तथा फ्रेमवर्क फॉर एक्शन के भाग के रूप में भागीदारों को वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार करने में मदद करेगा।

अंत में, मैं यूनेस्को इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफलांग लर्निंग के निदेशक श्री अर्नी कार्लसेन का उनके नेतृत्व के लिए धन्यवाद करना चाहती हूं। उन्होंने इस परियोजना के लिए शुरू से ही, मार्गदर्शन और बौद्धिक दिशा-निर्देश दिया है और वे अनुसंधान दलों, कर्मचारियों और भागीदारों के साथ समन्वय कर रहे हैं। मैं अपने सभी भागीदारों का इस कार्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूं, और मुझे विश्वास है कि यह बहस प्रोत्साहित करने, नई भागीदारी विकसित करने तथा कार्रवाई को सुदृढ़ करने में मदद करेगा।

एरिना बोकोवा
महानिदेशक, यूनेस्को

मुख्य संदेश

1.

बेलेम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन 2009 के सभी क्षेत्रों में देशों द्वारा प्रस्तुत प्रगति रिपोर्ट

- **नीतिः** 75% देशों ने रिपोर्ट किया है कि उन्होंने 2009 से अपनी वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (एलएलई) संबंधी नीतियों में काफी सुधार किया है। 70% देशों ने नई नीतियां लागू की है। काफी बड़ी संख्या में देशों (85%) ने कहा कि उनकी नीति की सर्वोच्च प्राथमिकता साक्षरता और बुनियादी दक्षता थी। 71% देशों ने सूचित किया कि उनके यहां औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा को मान्यता देने, वैधता प्रदान करने और अनुमोदन प्रदान करने का एक नीतिगत ढांचा है।
- **शासनः** 68% देशों ने सूचित किया कि शेयरहोल्डरों और नागरिक समाज के बीच परामर्श यह सुनिश्चित करने के लिए किया गया कि एएलई कार्यक्रमों को सीखने वालों की जरूरतों के अनुसार बनाया जाए।
- **वित्त–पोषणः** एएलई को आज भी सार्वजनिक वित्त–पोषण बहुत कम अनुपात में मिलता है: 42% देश एएलई पर अपने जन शिक्षा बजट का 1% से भी कम खर्च करते हैं, और केवल 23% देश 4% से अधिक व्यय करते हैं। हालांकि 57% देश और कम आय वाले 90% देश एएलई पर सार्वजनिक व्यय को बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।
- **भागीदारीः** पांच में से तीन देशों में भागीदारी दर बढी है, लेकिन बहुत अधिक वयस्क अभी भी एएलई के दायरे से बाहर हैं। पांच देशों में से एक देश ने कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि भागीदारी दर कैसे विकसित होती है।
- **गुणवत्ताः** 66% देशों ने समापन दरों के बारे में आंकड़े एकत्र किए, तथा 72% देशों ने प्रमाणन के बारे में सूचना एकत्र की। 81% देशों ने वयस्क शिक्षकों और सुविधा प्रदायकों को सेवा–पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया।

सर्वेक्षण के पूरे परिणामों को http://uil.unesco.org/grale. पर देखा जा सकता है। यह वेबसाइट विश्लेषकों को एएलई की वैश्विक स्थिति की तस्वीर विकसित करने में मदद करेंगे।

2.

एएलई आजीवन शिक्षा का एक मुख्य घटक है और यह स्थायी विकास एजेंडा 2030 में प्रमुख योगदान देगा

- *गराले III* दर्शाता है कि एएलई से अनेक क्षेत्रों को काफी लाभ हुआ है। कई देशों ने इस बात के व्यापक साक्ष्य दिए हैं कि एएलई का स्वास्थ्य एवं कल्याण, रोजगार और श्रम बाजार, तथा सामाजिक, नागरिक और सामुदायिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- आगे और कौशल विकसित करने के लिए साक्षरता अनिवार्य है, इसलिए 65% देशों ने साक्षरता की एक प्रमुख कारक के रूप में पहचान की है जिनका स्वास्थ्य और कल्याण पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। साक्षरता कर्मचारियों को उनके कार्यस्थल पर प्रभावी और सुरक्षित ढंग से कार्य करने में समर्थ बनाने के लिए भी अनिवार्य है। इसके अलावा, जिन दो–तिहाई देशों ने *गराले III* निगरानी सर्वेक्षण पर कार्य किया, ने कहा कि साक्षरता कार्यक्रमों ने लोकतांत्रिक मूल्यों, शांति प्रयासों

और सामुदायिक एकजुटता विकसित करने में मदद की।

- 35% देशों ने कहा कि अंतर-विभागीय सहयोग अच्छा न होने से एएलई द्वारा शिक्षा एवं कल्याण का व्यापक लाभ नहीं उठाया जा सका। केवल एक-तिहाई देशों ने कहा कि उनके यहां एक अंतर-विभागीय या बहु-क्षेत्रीय समन्वय निकाय मौजूद है जो एएलई को व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

- 64 देशों ने *गराले III* सर्वेक्षण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि अपर्याप्त या दिशाहीन किया गया वित्त-पोषण एक महत्वपूर्ण तथ्य है जो एएलई को स्वास्थ्य और कल्याण पर व्यापक प्रभाव डालने से रोकता है।

- आधे से अधिक देशों ने स्वीकार किया कि एएलई रोजगार दिलाने में 'मध्यम' से 'उच्च' प्रभाव डाल सकता है।

- लगभग 53% देशों ने सूचित किया कि एलएलई के श्रम बाजार परिणामों से उनके ज्ञान आधार में सुधार हुआ था।

- दस देशों में से नौ देशों ने कहा कि अब वे 2009 की तुलना में समाज और समुदाय पर एलएलई के प्रभाव के बारे में अधिक जानते हैं।

- एएलई का सक्रिय नागरिकता, राजनैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक एकजुटता, विविधता और सहनशीलता पर व्यापक प्रभाव पड़ा है और इसलिए यह सामाजिक और सामुदायिक जीवन को लाभ पहुंचाता है।

3.
वयस्कों में साक्षरता का स्तर चिंताजनक ढंग से कम है

- लगभग 758 मिलियन वयस्क, आज भी एक साधारण वाक्य पढ़ या लिख नहीं सकते, जिसमें से 115 मिलियन वयस्क 15 से 24 वर्ष के हैं। अधिकांश देश 2015 तक वयस्क शिक्षा में 50% तक सुधार प्राप्त करने के "सभी के लिए शिक्षा" के लक्ष्य को प्राप्त करने से पिछड़ गए हैं; केवल 39 देशों ने ही यह लक्ष्य हासिल किया है।

- 85% देशों ने कहा कि उनके एएलई कार्यक्रमों के लिए साक्षरता और बुनियादी दक्षता उच्च प्राथमिकता थी। अधिकांश देशों में, एएलई नीति निर्माता और प्रदायक कम साक्षर और बुनियादी कौशल वाले वयस्कों पर विशेष ध्यान देते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वयस्क साक्षरता और बुनियादी कौशल में दक्षता प्राप्त करें, अधिकांश देशों में यह उच्च प्राथमिकता बना हुआ है, भले ही उनकी आयु कितनी भी हो।

4.
स्त्री-पुरुष असमानता एक चिंता का विषय बना हुआ है

- महिलाओं की शिक्षा और योग्यता में व्याप्त असमानता एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है। स्कूल छोड़ने वाले बच्चों में अधिकांश लड़कियां होती हैं, दुनिया की 9.7% लड़कियां स्कूल नहीं जाती जबकि लड़कों की संख्या 8.3% है। इसी प्रकार, कम साक्षरता कौशल वाले अधिकांश वयस्कों (63%) में महिलाएं अधिक हैं।

- इसके बावजूद, कुछ बातें उम्मीद जगाती हैं: 44% भागीदार देशों में महिलाओं की एएलई में भागीदारी पुरुषों के मुकाबले अधिक थी। हालांकि लगभग 24% देशों के पास इस मुद्दे पर रिपोर्ट करने के लिए कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं थे। एएलई में जेंडर समानता पर आंकड़ों में सुधार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्तिगत जीवन में सुधार करने से महिलाओं की शिक्षा का उनके परिवारों और बच्चों की शिक्षा पर सशक्त माध्यमिक प्रभाव पड़ेगा। महिलाओं की शिक्षा का आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और नागरिक प्रतिबद्धता पर भी गहरा प्रभाव पड़ेगा।

5. 2009 से निगरानी और मूल्यांकन में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद एएलई के मूल आंकड़े अपर्याप्त बने हुए हैं और इसलिए एएलई के वास्तविक प्रभावों को अच्छी तरह से नहीं समझा जा सकता

- आंकड़ों से संबंधित समस्याएं दुनिया के सभी क्षेत्रों में मौजूद हैं, वहां भी, जहां सुविकसित सूचना प्रणालियां मौजूद हैं। इसलिए *गराले-III* में यह चर्चा किए जाने की जरूरत है कि डिजाइन को कैसे बेहतर बनाया जाए, क) आंकड़े एकत्र करने की समस्या को दूर करने का पता लगाया जाए; और ख) देशों की वर्तमान और भावी वित्तीय और मानव संसाधन क्षमताओं की बराबरी करना।

6. 2030 का भावी दृष्टिकोण: एएलई लोगों की भावी आवश्यकताओं को पूरा करने में कैसे सक्षम हो सकता है

- अगले 15 वर्षों और उसके बाद के वर्षों में, देशों को व्यापक पलायन, रोजगार असमानता, पर्यावरणीय स्थायित्व और प्रौद्योगिकीय बदलावों जैसे मुद्दों के संबंध में अनेक जटिल चुनौतियों का सामना करना होगा। एएलई जन नीतियों का एक प्रमुख घटक है जो इन चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकता है। एएलई संघर्ष और गरीबी को रोकने, लोगों को एक साथ मिलकर रहने, स्वस्थ रहने, चाहे उनकी आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, में मदद कर सकता है। एएलई लोगों को उनकी पूरी जिन्दगी में उनके ज्ञान और कौशल को अद्यतन बनाने में मदद करके अंतर ला सकता है ताकि वे अपनी योग्यता को बनाए रख सकें और समाज में स्वस्थ और उत्पादक सदस्यों के रूप में योगदान दे सकें।

- स्थायी विकास एजेंडा 2030 के भाग के रूप में, विश्व के नेताओं ने 'सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसर' उपलब्ध कराने का वायदा किया था, ताकि वयस्क साक्षरता में सुधार हो सके तथा अन्य अनिवार्य दक्षता और ज्ञान को विकसित किया जा सके। एएलई गरीबी से लड़ने से लेकर पर्यावरण दुर्दशा से निपटने संबंधी स्थायी विकास के सभी लक्ष्यों में योगदान देगा।

- बेलेम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन तथा वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी सिफारिश, आने वाले वर्षों में एएलई का विकास करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम होगा। गराले बेलेम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन तथा वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी सिफारिश, दोनों की निगरानी करेगा। इन अनुपूरक फ्रेमवर्क से अंतर्राष्ट्रीय एएलई समुदाय यूनेस्को के सदस्य देशों में एएलई नीति और पद्धति के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। कनफाइनटिया VI की मध्यावधि समीक्षा 2017 में होनी है, जो शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन के भाग के रूप में एएलई को प्रोत्साहित करने हेतु बहुमूल्य अवसर उपलब्ध कराएगा।

कार्यकारी सार

प्रस्तावना:
वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने की दुनिया:

वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने संबंधी तृतीय वैश्विक रिपोर्ट (गराले III) में पुख्ता आंकड़े और प्रायोगिक उदाहरण दिए गए हैं जो दर्शाते हैं कि वयस्कों को सिखाना और पढ़ाना (एएलई) व्यक्तियों को स्वस्थ रहने, उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करने तथा अधिक ज्ञानवान और सक्रिय नागरिक बनने में मदद करता है, भले ही वे दुनिया के किसी भाग में रहते हों।

दुनिया भर में नीति-निर्माता एएलई के महत्व को पहचानते हैं। *गराले III* निगरानी सर्वेक्षण में जिन 139 देशों ने भाग लिया था, उनका एएलई की क्षमता के बारे में सकारात्मक मत था, तथा कई लोगों ने सकारात्मक उदाहरणों का आदान-प्रदान किया था (देखें बॉक्स 1)।

वर्ष 2015 में, वैश्विक नेताओं ने कई परिवर्तनकारी वक्तव्यों के माध्यम से एएलई को विकसित करने का वायदा किया था, जिसमें वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी की गई सिफारिश, स्थायी विकास एजेंडा 2030; तथा शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन शामिल था।

इन करारों में किए गए वायदे 2009 बेलेम फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन पर आधारित थे, जिन्हें ब्राजील में वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने(कनफाइनटिया VI) संबंधी छठे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 144 देशों द्वारा अपनाया गया था। बेलेम फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन में, देशों ने पांच क्षेत्रों: नीति, शासन, वित्त, भागीदारी और गुणवत्ता में एएलई में सुधार करने पर सहमति जताई थी।

बॉक्स 1
एएलई के लाभ: कुछ उदाहरण

- **फिलीपीन्स में,** एएलई कार्यक्रमों के अंतर्गत स्तनपान और नवजात शिशु पोषण को प्रोत्साहन देने से नवजात शिशु मृत्यु दर कम हुई है।
- **संयुक्त राज्य अमेरिका में,** एएलई से बेहतर पर्यावरणीय आचरण और उन्नत साक्षरता विकसित हुई है।
- **चीन में,** शारीरिक व्यायाम और संगीत संबंधी कार्यक्रमों ने बुजुर्गों के मानसिक स्वास्थ्य और पुनरुत्थान में सुधार किया है।
- **यूरोप में,** दर्जनों अध्ययनों ने दर्शाया है कि एएलई से मालिकों को आर्थिक लाभ मिला है।

1.
गराले III: एक सिंहवालोकन

इस रिपोर्ट का पहला उद्देश्य यह निगरानी करना है कि क्या देश अपनी बेलेम प्रतिबद्धताओं को अमल में ला रहे हैं। **अध्याय 1** में पांच बेलेम कार्य क्षेत्रों की प्रत्येक की जांच की गई है, जिन्हें मुख्यत: *गराले III* निगरानी सर्वेक्षण के 139 देशों से प्राप्त प्रतिक्रिया से लिया गया है।

रिपोर्ट का दूसरा उद्देश्य एएलई और तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों: स्वास्थ्य और कल्याण (**अध्याय 2**); रोजगार और श्रम बाजार (**अध्याय 3**); तथा सामाजिक, नागरिक और सामुदायिक जीवन (**अध्याय 4**) के बीच संपर्कों की जांच करना है। निगरानी सर्वेक्षण

के आंकड़ों का विश्लेषण करने के साथ ही, प्रत्येक अध्याय संबंधित साहित्य और एएलई में आगे निवेश करने के लिए देशों को सोचने हेतु बाध्य करता है। रिपोर्ट का तीसरा उद्देश्य नीति निर्माताओं और प्रेक्टिशनरों का भविष्य में मार्गदर्शन करना है। **अध्याय 5** में तीन *गराले* रिपोर्टों के अध्यायों को साझा किया गया है जिन्हें 2009 से तैयार किया गया है। इसमें छह प्रमुख वैश्विक रुझानों के एएलई के प्रभावों पर भी विचार किया गया है। अध्याय 6 में यह जांच की गई है कि एएलई को स्थायी विकास लक्ष्यों में कैसे प्रदर्शित किया जाए। इसमें कनफाइनटिया VI की मध्यावधि समीक्षा पर आगे विचार करने के लिए सिद्धांतों और नीतियों की सिफारिशें की गई हैं, जो 2017 से शुरू होंगी।

2. एएलई में निगरानी प्रगति: बेलेम फ्रेमवर्क फ्ऱॉर एक्शन

2009 के बाद से एएलई में हुई प्रगति का जायजा लेने के लिए, यूनेस्को के 195 सदस्य देशों को 2015 में 75 प्रश्नों का एक सर्वेक्षण पूरा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस सर्वेक्षण की रूपरेखा यूनेस्को सांख्यिकीय संस्थान; यूनेस्को वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के विशेषज्ञों के सहयोग से बनाई गई थी। प्रश्नावली में बेलेम फ्रेमवर्क फ्ऱॉर एक्शन में पता लगाए गए पांच कार्य क्षेत्रों में प्रत्येक को शामिल किया गया था। कुल मिलाकर, 139 देशों (यूनेस्को सदस्य देशों का 71%) ने संपूर्ण सर्वेक्षण पर या उसके महत्वपूर्ण भागों पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। उनके उत्तर में एएलई[1] में विकास और रुझानों के बारे में गहरी समझ प्रदान की गई थी।

शुरुआत में, सर्वेक्षण में देशों से पूछा गया कि क्या उनके पास एएलई की कोई सरकारी परिभाषा है, और यदि हाँ, तो 2009 के बाद से इन परिभाषाओं को कैसे विकसित किया गया है।

- 75% देशों ने सूचित किया कि उनके यहां एएलई की सरकारी परिभाषा है। लेटिन अमेरिका और कैरिबियन में 84% देशों; उत्तरी अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में केवल 52% के पास अपनी परिभाषाएं थीं।
- 13% देशों ने 2009 के बाद से एएलई की अपनी परिभाषा में काफी परिवर्तन किया है। 62% ने सूचित किया कि 2009 के बाद से एएलई की परिभाषा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और 25% ने कहा कि परिभाषा में मामूली परिवर्तन किया गया है।

3. एएलई के लिए राजनीतिक प्रतिबद्धता सुदृढ़ करना

बेलेम फ्रेमवर्क फ्ऱॉर एक्शन में नीतियों और कानूनों के रूप में एएलई के लिए राजनीतिक प्रतिबद्धता करने हेतु देशों से आह्वान किया गया है। *गराले III* निगरानी सर्वेक्षण में पूछा गया कि क्या 2009 के बाद से नीतियों में सुधार हुआ था। इसने महत्वपूर्ण नीतिगत लक्ष्यों जैसे साक्षरता और बुनियादी कौशल को प्रोत्साहित करने, जिसमें उपेक्षित समूह भी शामिल थे; तथा अनौपचारिक शिक्षा को मान्यता देने, वैधता बनाने और स्वीकार करने के बारे में भी पूछा गया।

- 75% देशों ने सूचित किया कि उन्होंने अपनी एएलई नीतियों और कानूनों में पर्याप्त सुधार किया है। 70% ने कहा कि उन्होंने 2009 के बाद से नई एएलई नीतियों को लागू किया था।
- 85% देशों के लिए, साक्षरता और बुनियादी कौशल एएलई कार्यक्रमों में शीर्ष प्राथमिकता है। मध्य और पूर्वी यूरोप में केवल 57% देशों ने उन्हें उच्च प्राथमिकता दी थी।
- 81% देशों ने कहा कि उनकी नीतियां निम्न स्तरीय साक्षर या बुनियादी कौशल वाले वयस्कों का समाधान करती हैं। हालांकि अनेक समूह वंचित बने हुए हैं; केवल देशों की एएलई नीतियां ही जातीय, भाषायी और धार्मिक अल्पसंख्यकों का समाधान करती हैं। केवल 17% देशों ने प्रवासियों और शरणार्थियों की समस्याओं का समाधान किया। केवल 17% देशों ने दिव्यांग वयस्कों की समस्याओं का समाधान किया।
- 41% का कहना था कि उनके यहां 2009 से पूर्व अनौपचारिक और औपचारिक शिक्षा को

75% देशों ने 2009 के बाद से अपनी एएलई नीतियों में काफी सुधार की सूचना दी है।

[1] *गराले III* में सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्षों का उल्लेख किया गया है। जहां परिणामों का प्रतिशत के रूप में उल्लेख किया गया है, जो विशिष्ट प्रश्नों पर उत्तर देने वाले देशों के अनुपात में है। सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं की पूर्ण श्रृंखला http://www.uil.unesco.org/grale में उपलब्ध है।

मान्यता देने, वैध बनाने और स्वीकार करने के लिए नीतिगत ढांचा था। 30% देशों में 2009 के बाद से स्थापित ढांचा है। 29% देशों द्वारा अभी ऐसा किया जाना है।

60% देशों ने रिपोर्ट दी है कि 2009 के बाद एएलई को जन शिक्षा व्यय के लिए अपेक्षाकृत बहुत कम अंशदान प्राप्त हुआ है।

4. एएलई के शासन को और अधिक प्रभावी बनाना

बेलेम फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन में, देशों ने एक ऐसे शासन ढांचे की स्थापना करने का संकल्प लिया, जिससे एएलई और अधिक प्रभावशाली हो गया। *गराले III* सर्वेक्षण में पूछा गया कि क्या एएलई को राष्ट्रीय से क्षेत्रीय और स्थानीय स्तरों तक विकेन्द्रीकृत किया जा रहा है; क्या एएलई नीतियों और कार्यक्रमों का विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन करने के लिए संगत शेयरधारकों को शामिल किया जा रहा था; और क्या एलएलई पर अंतर-मंत्रालय सहयोग से कोई सुधार हुआ था।

- 42% देशों ने स्वीकार किया कि 2009 के बाद से एएलई अधिक विकेन्द्रीकृत हो गया है, जबकि 26% ने इसमें कुछ का विकेन्द्रीकरण स्वीकार किया है। 32% ने असहमति तथा कुछ हद तक असहमति दर्शाई। देशों के अनुभवों से पता चला कि विकेन्द्रीकरण बेहतर कार्य करता है जब राष्ट्रीय संस्थान समग्र समन्वय, वित्त-पोषण और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं तथा जब स्थानीय संस्थान कार्यक्रम लागू करते हैं और शिक्षा आवश्यकताओं की पहचान करते हैं।
- 68% देशों ने कहा कि उन्होंने 2009 के बाद से एएलई नीतियों के बारे में शेयरधारकों और नागरिक समाजों के साथ परामर्श किया है।
- लगभग 90% देशों ने कहा कि 2009 के बाद से एएलई पर अंतर-मंत्रालय समन्वय सुदृढ़ हुआ है।

5. एएलई के लिए पर्याप्त वित्त-पोषण सुनिश्चित करना

बेलेम फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन में एएलई के वित्त-पोषण पर अनेक प्रतिबद्धताएं शामिल हैं। सार्वजनिक खर्च में कुल वृद्धि के साथ, इसमें सरकारी विभागों में अधिक संभावित वित्तीय कार्यनीतियां बनाने, व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए बेहतर प्रोत्साहन देना, एनजीओ और व्यक्तियों द्वारा एएलई में निवेश करना तथा वंचित और कमजोर जनसंख्या पर अधिक ध्यान देने का आह्वान किया गया है।

- एएलई को जन शिक्षा व्यय के लिए अपेक्षाकृत बहुत कम अंशदान प्राप्त होता है। 42% देश एएलई पर अपने जनशिक्षा बजट का 1% से भी कम खर्च करते हैं, और केवल 23% देश 4% से अधिक खर्च करते हैं।
- 46% देशों ने कहा कि एएलई पर किए गए व्यय का अनुपात 2009 और 2014 के बीच बढ़ा था और 13% ने सूचित किया कि एएलई के व्यय में कमी हुई थी।
- भविष्य के लिए कुछ संकेत सकारात्मक हैं: 57% देशों और न्यून आय वाले 90% देशों ने कहा कि वे अपने एएलई व्यय को बढ़ाने की योजना बनाना चाहते हैं।
- सभी प्रदेशों से देशों ने नई एएलई वित्त-पोषण प्रणाली विकसित की है।

6. एएलई में उपलब्धता तथा भागीदारी का विस्तार करना

बेलेम फ्रेमवर्क फ्रॉर एक्शन में, देशों ने एएलई कार्यक्रमों में समग्र भागीदारी को बढ़ाने के उपाय करने और महिलाओं तथा वंचित समूहों, जिनमें जातीय अल्पसंख्यक, शरणार्थी, प्रवासी तथा गरीबी में रह रहे लोगों तथा दूर-दराज के क्षेत्र शामिल हैं, के शिक्षा के और अधिक अवसर उपलब्ध कराने पर सहमति जताई है।

- एएलई की समग्र भागीदारी दर में सकारात्मक रुझान हुआ है। 60% देशों ने 2009 के बाद से वृद्धि की रिपोर्ट दी है जबकि केवल 7% का कहना है कि भागीदारी कम हुई है।
- एएलई में समग्र स्त्री-पुरुष अंतर घट रहा है। हालांकि पुरुषों के औपचारिक तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में अधिक भाग लेने की संभावना है, जबकि महिलाओं के गैर-औपचारिक एएलई में अधिक भाग लेने की संभावना रहती है।
- 50% देशों ने 2009 के बाद से उन युवाओं की भागीदारी की उच्च रिपोर्ट दी जो शिक्षा, रोजगार या प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर रहे थे। 28% देशों ने कहा कि बूढ़े वयस्कों की भागीदारी दर बढ़ी है।
- भागीदारी पर आंकड़े पर्याप्त नहीं हैं। 62% देशों न अल्पसंख्यक जातीय, धार्मिक या

भाषायी समूहों पर कोई अनुमान उपलब्ध नहीं कराया है। 56% ने प्रवासियों और शरणार्थियों पर रिपोर्ट नहीं दी, जबकि 46% ने दिव्यांग वयस्कों पर रिपोर्ट नहीं दी।

7.
एएलई की गुणवत्ता में सुधार करना

गराले ।।। निगरानी सर्वेक्षण में एएलई की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अनेक तरीकों पर विचार किया गया है। इनमें एएलई निष्कर्षों पर व्यवस्थित सूचना एकत्र करना; शिक्षकों के लिए सेवा-पूर्व शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराना; शिक्षकों को प्रारंभिक योग्यताएं प्राप्त करना; शिक्षकों को सेवाकालीन शिक्षा उपलब्ध कराना; तथा एएलई पर अनुसंधान और विश्लेषण आयोजित करना शामिल है।

- अधिकांश देश व्यवस्थित रूप से एएलई के प्रशासनिक परिणामों पर नजर रखते हैं। 72 देशों ने जारी प्रमाण-पत्रों और योग्यताओं पर सूचना एकत्र की, जबकि 66% देशों ने समापन दरों की निगरानी की।
- बहुत कम देशों ने एएलई पर आर्थिक और सामाजिक निष्कर्षों पर सूचना एकत्र की जैसे रोजगार परिणाम (40% देश) या सामाजिक परिणाम जैसे स्वास्थ्य (29%)।
- 81% देशों में एएलई के लिए प्रारंभिक, सेवा-पूर्व शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम थे। इनमें 92% अरब राज्य, लेकिन लेटिन अमेरिका और कैरिबियन के केवल 67% देश शामिल थे। केवल 46% देशों ने कहा कि एएलई सीखने के लिए सेवा-पूर्व योग्यताएं आवश्यक हैं।
- 85% देशों ने सूचित किया कि उनके यहां सेवाकालीन व्यावसायिक विकास है, लेकिन 54% देशों ने कहा कि उनके विकास कार्यक्रमों में पर्याप्त क्षमता नहीं है।

8.
स्वास्थ्य और कल्याण पर एएलई का प्रभाव

नीति निर्माताओं को यह समझने और प्रमुख तीन कारणों के लिए एएलई, स्वास्थ्य और कल्याण के बीच संपर्कों को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है:

- स्वास्थ्य देखभाल बजट कम होने से एएलई लोगों को यह दर्शाने का एक किफायती तरीका यह हो सकता है कि स्वास्थ्य समस्याओं से कैसे निपटा जाए और स्वास्थ्य परिपाटियों को अपनाया जा सके।
- स्वास्थ्य के प्रति हमारी समझ में विस्तार हुआ है जिसमें कल्याण भी शामिल है। अध्ययन और शिक्षा लोगों की उनके जीवन की गुणवत्ता और आय के साधनों पर अधिक नियंत्रण करने तथा जीवन के दबाव से निपटने में दक्षता हासिल करने में मदद कर सकती है।
- स्थायी विकास लक्ष्यों में समस्त सरकारी नीतियां बनाने का आह्वान किया गया है, और असंख्य अध्ययन दर्शाते हैं कि कैसे स्वास्थ्य परिणाम, स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली पर अधिक निर्भर करते हैं।

89% देशों ने स्वीकार किया कि एएलई ने स्वास्थ्य और कल्याण में 'अहम' योगदान दिया है।

बेहतर शिक्षा से बेहतर स्वास्थ्य का मार्ग शायद ही कभी साथ-साथ चल पाते हैं। लोगों को जीवन के बढ़ने के साथ-साथ अपनी शिक्षा और स्वास्थ्य पर भी लगातार ध्यान रखना होता है जैसा कि वे नया ज्ञान, कौशल और व्यवहार प्राप्त करते हैं। इसके अलावा, शिक्षा और स्वास्थ्य विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भिन्न-भिन्न होते हैं; इसलिए एक समुदाय में जिसे स्वास्थ्य परिपाटी माना जाता है, दूसरे में उसे अस्वस्थ माना जाता है।

इसके बावजूद, *गराले ।।।* निगरानी सर्वेक्षण में पाया गया कि 89% देशों ने स्वीकार किया कि एएलई ने व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं कल्याण में 'अहम' योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य और शिक्षा के बीच सकारात्मक संपर्क के साक्ष्य व्यापक हैं। व्यक्तियों के लिए, अच्छा सामान्य स्वास्थ्य बेहतर शिक्षा निष्कर्षों और परिवारों, समुदायों और कार्यस्थलों में अधिक सकारात्मक कार्यों में परिणत होता है। समाज के लिए, इसका अर्थ मानव पूंजी का उच्चतर स्तर तथा अर्थव्यवस्था और सामुदायिक जीवन में पूर्ण भागीदारी है। प्रमुख अध्ययनों ने व्यापक श्रृंखला के विशिष्ट लक्ष्यों तथा एएलई को प्रतिलाभ को उजागर किया है:

- **स्वास्थ्य व्यवहार और प्रवृत्ति:** अधिक शिक्षित लोगों द्वारा स्वास्थ्य जीवन शैली और अपने स्वास्थ्य को कैसे बनाए रखा जाना चाहिए, को अपनाने की अधिक संभावना रहती है। एएलई लोगों की स्वास्थ्य सुविधाओं को अपनी आवश्यकता अनुसार विश्वास के साथ अपनाने में भी मदद कर सकता है।

- **लम्बी आयु प्रत्याशा और विकलांग मुक्त जीवन प्रत्याशा:** अधिक शिक्षित लोग अधिक जीवन जीते हैं, और उनके द्वारा जीवन में विकलांगता या कष्ट से कम प्रभावित होने की संभावना रहती है।
- **जीवन शैली से संबंधित रोगों में कमी:** अधिक शिक्षित लोगों के हृदय रोगों, आघात और मधुमेह से कम प्रभावित होने की संभावना रहती है। एएलई वयस्कों को अस्वस्थकर भोजन करने तथा पर्यावरण प्रदूषण का समाधान करने में भी समर्थ बना सकता है।

अनुसंधान निकाय अध्ययन दर्शाते हैं कि एएलई पर व्यावसायिक कार्यक्रमों में महिलाओं की अपेक्षा पुरूष अधिक भाग लेते हैं।

गराले III सर्वेक्षण से स्वास्थ्य के संबंध में प्रमुख चुनौतियों का पता चला है। 65% देशों ने निरक्षरता को एक प्रमुख समस्या के रूप में पहचाना है जिसका स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। यहां संचयी असमानता पर मुख्य रूप से विचार किया जाता है: उपेक्षित समूहों में प्राय: स्वास्थ्य देखभाल तथा स्वास्थ्य के सकारात्मक प्रभाव वाले शैक्षणिक कार्यकलापों की उपलब्धता कम होती है। देशों को महिलाओं में विशेषकर साक्षरता की न्यून दरों को देखते हुए स्त्री-पुरुष समानता पर भी आवश्यक ध्यान देना होगा। इसके अलावा, देशों को 'पृथक बजट' से भी निपटना होगा। 46% देशों ने कहा कि अपर्याप्त या दिशाहीन वित्त-पोषण का एएलई पर व्यापक असर पड़ता है। जन स्वास्थ्य का बड़ा हिस्सा निवारक शिक्षा की बजाय अत्यधिक देखभाल और अस्पताल पर खर्च किया जाता है। प्रत्येक मंत्रालय अपने निजी बजट के लिए जिम्मेदार होते हैं। मंत्रालयों के लिए अन्य क्षेत्रों में उनके कार्य के सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पर विचार करने के लिए सीमित संसाधन होते हैं।

स्थायी विकास एजेंडा 2030 में अधिक समग्र नीति निर्माण और बजट बनाने हेतु एक प्रवेश बिंदु उपलब्ध कराया गया है। वर्तमान स्थिति के अनुसार, 35% देशों का कहना है कि घटिया अंतर-विभागीय सहयोग के कारण एएलई का व्यापक प्रभाव प्राप्त करना संभव नहीं है। केवल एक-तिहाई देशों का कहना है कि उनके यहां अंतर-विभागीय या बहु-क्षेत्रीय समन्वय निकाय हैं जो एएलई को व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण के लिए प्रोत्साहित करते हैं। स्थायी विकास लक्ष्य 3 का उद्देश्य 'स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना तथा सभी आयु के लोगों के कल्याण को प्रोत्साहित करना है। यह स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों के संगठित प्रयासों के बिना प्राप्त करना असंभव है।

9. रोजगार और श्रम बाजार के लिए एएलई और कौशल

दुनिया का कार्य और अधिक जटिल और अनिश्चित होता जा रहा है:

- नई प्रौद्योगिकियां कार्यस्थल में दक्ष लोगों की आवश्यकता के तौर-तरीकों को बदल रही हैं। वयस्कों को नया कौशल प्राप्त करने और श्रम बाजार में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक मांगों का प्रबंधन करने में सहायता की आवश्यकता होती है।
- लोगों द्वारा अधिक उम्र तक जीने के कारण यदि बूढ़े लोगों को लम्बी अवधि तक श्रम बाजार में बने रहना है तो उन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता होगी।
- सीमा-पार और ग्रामीण शहरी पलायन श्रम बाजारों के लिए मेजबान देशों और नगरों तथा प्रवासियों द्वारा छोड़कर आए देशों और नगरों, दोनों के लिए अवसर और चुनौतियां लाता है।

एएलई लोगों और देशों को इन परिवर्तनों को अपनाने में मदद कर सकता है। व्यापक अनुसंधान निकाय अध्ययन दर्शाते हैं कि एएलई ने व्यक्तियों, उनके मालिकों, देशों और उनकी अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक श्रम बाजार प्रदान किए हैं। शिक्षा कौशल को बढ़ावा देती है तथा और अधिक कुशल लोगों को श्रम बाजार में रोजगार मिलता है, वे आसानी से सफल और अपनी पसंद का रोजगार पाते हैं। वे अधिक मजदूरी भी पाते हैं। संगठनों और अर्थव्यवस्था के ये व्यक्तिगत लाभ उच्च स्तरीय उत्पादकता, उद्यमशीलता, कर राजस्व और समग्र आर्थिक विकास में परिणत हो जाते हैं।

एएलई से बाजार श्रम के अधिक सामान्य और अप्रत्यक्ष परिणामों का भी पता चलता है। एएलई स्वास्थ्य और कल्याण को प्रोत्साहित करता है, आत्म-सम्मान बढ़ाता है और लोगों को अपना जीवन व्यवस्थित करने में उनकी क्षमता में सुधार करता है। इनसे कार्यशील श्रम बाजार बेहतर बन सकते हैं और यह सामाजिक एकजुटता को प्रोत्साहित करता है।

एएलई के लाभ को अधिकतम करने के लिए नीति निर्माताओं को स्त्री-पुरुष असमानता को दूर करना होगा। मजदूर वर्ग में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने से आर्थिक विकास में काफी अधिक वृद्धि की जा सकती है। फिर भी व्यावसायिक कार्यक्रमों - जो एएलई का रूप है, के वित्तीय लाभ से सीधा जुड़ने

की काफी अधिक संभावना रहती है – जिन पर प्राय: पुरुषों का वर्चस्व होता है। *गराले III* निगरानी सर्वेक्षण में भागीदारी करने वाले 54% देशों ने कहा कि व्यावसायिक प्रशिक्षण में महिलाओं की तुलना में पुरुष अधिक भाग लेते हैं। भेदभाव को रोकने के नए कानूनों और कार्यक्रमों के बावजूद सामाजिक मानदंड आज भी महिलाओं को काम करने और अपनी शिक्षा से लाभ उठाने से रोकते हैं।

असमानता व्याप्त होने से एएलई के श्रम बाजार परिणामों को काफी अधिक प्रभावित कर सकती है। जहां असमानता अधिक है, वहां राष्ट्रीय औसत से शिक्षा, उत्पादकता और अभिनवता में सुधार दिखाई दे सकता है, लेकिन इससे वंचित समूहों की दुर्दशा का पता नहीं चलता, जो प्राय: शोषण और अनियमित कार्य स्थितियों के अधीन होते हैं। मालिकों द्वारा एएलई में उन कर्मचारियों पर निवेश करने की अधिक संभावना रहती है जिनके पास पहले से ही मान्य योग्यता है। साक्षरता कार्यक्रमों से वंचित समूहों को श्रम बाजार के बारे में जानकारी प्राप्त करने, नौकरी में बने रहने और अपनी नौकरी की तलाश करने में मदद मिलेगी।

एएलई का प्रभाव बाजार रणनीतियों पर भी निर्भर करता है जो मालिक और नीति निर्माता उत्पादकता बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। जहां उनकी रणनीति से वस्तुओं के मूल्य (गुणवत्ता आधारित प्रतिस्पर्धा) को बढ़ाया जाना है, वहां एएलई में निवेश करने की स्पष्ट संभावना रहती है, क्योंकि इससे अभिनवता और विकास को प्रोत्साहन मिलता है। जहां उनकी रणनीति केवल लागत (मूल्य आधारित प्रतिस्पर्धा) को कम करना है, वहां न तो मालिक और न ही कर्मचारी एएलई में निवेश करने के इच्छुक होंगे।

अधिकांश देश श्रम बाजार में एएलई के महत्व को समझते हैं। *गराले III* सर्वेक्षण में भाग लेने वाले आधे से अधिक देशों ने कहा कि एएलई का रोजगार दिलने पर 'ठोस' या 'मध्यम' प्रभाव पड़ा है। यह पूछने पर कि किस प्रकार के एएलई का सबसे सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, 53% देशों ने प्रारंभिक शिक्षा और प्रशिक्षण को चुना। 53% देशों ने 2009 के बाद से एएलई के श्रम बाजार परिणामों से उनकी जानकारी के आधार में सुधार की सूचना दी। व्यक्तियों का यह भी मानना है कि एएलई से उनकी रोजगार संभावनाएं बढ़ी हैं। वयस्क कौशल पर ओईसीडी सर्वेक्षण (पीआईएएसी) में भाग लेने वाले देशों में 80% से 90% वयस्कों ने ऐसा नौकरी पाने के लिए किया।

ठोस साक्ष्य और सकारात्मक अवधारणाओं के बावजूद एएलई में सार्वजनिक निवेश पर्याप्त नहीं हुआ है। सार्वजनिक निवेश व्यक्तियों और फर्मो को लागत साझा करने या जोखिम कम करने के उपायों द्वारा प्रोत्साहित कर सकता है। आगे ओर प्रोत्साहन देने के लिए नीति निर्माताओं को एएलई के सभी रूपों को मान्यता और वैधता प्रदान करने के लिए प्रोत्साहन देना होगा, जिससे गैर-औपचारिक शिक्षा औरअनौपचारिक शिक्षा को मान्यता-प्राप्त योग्यता के साथ जोड़ा जा सके। इससे गैर-औपचारिक एएलई या 'न्यून-स्तरीय' शैक्षणिक ट्रैक से जुड़ा कलंक दूर होगा।

स्थायी विकास एजेंडा 2030 एएलई में निवेश करने वाले देशों के लिए राजनैतिक दृष्टि से काफी फायदेमंद है। शैक्षणिक लक्ष्य (स्थायी विकास लक्ष्य 4) के अंतर्गत चार लक्ष्य श्रम बाजार परिणामों से सीधे तौर पर जुड़े हैं। एएलई स्थायी विकास लक्ष्य 8 में मूलभूत योगदान दे सकता है, जो सभी के लिए शिक्षा और बेहतर कार्य पर केन्द्रित है।

एएलई लोगों को विविधता में और अधिक सहनशील बनने, स्थिरता के मुद्दों पर अधिक ध्यान देने, तथा कला, जातीयता और सांस्कृतिक विपणन के प्रति अधिक जागरूक हो सकता है।

10. सामाजिक, नागरिक और सामुदायिक जीवन में एएलई की भूमिका

वयस्क शिक्षा पर हैमबर्ग घोषणा, जिसे 1997 में कनफाइनटिया-V में अपनाया गया था, में यह उल्लेख किया गया है कि 'वयस्क शिक्षा सक्रिय नागरिकता और समाज में पूर्ण भागीदारी स्थिति, दोनों का परिणाम है। इसका अर्थ है कि एएलई सामाजिक परिवर्तन ला सकता है, लेकिन ये नागरिक और सामाजिक ढांचे एएलई की उपलब्धता और गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं।

इस बात के ठोस प्रमाण हैं कि एएलई नागरिकों को उनके समुदायों में अधिक सक्रिय और संसाधन संपन्न सदस्य बनने में मदद कर सकता है। एएलई न केवल व्यक्तियों को उनकी साक्षरता, संख्या ज्ञान और व्यावहारिक कौशल में सुधार करता है, बल्कि यह मुश्किल से उबरने, आत्म-विश्वास पैदा करने और समस्या का समाधान करने जैसा जीवन कौशल भी प्रदान करता है। यह लोगों को विविधता के प्रति अधिक सहनशील बनने, तथा कला, नैतिकता और सांस्कृतिक विरासत के प्रति अधिक जागरूक बनने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।

ऊपर उल्लिखित सभी शैक्षिक लाभ अपने स्वरूप में लाभकारी हैं। हालांकि, इनसे भविष्य में व्यापक सामाजिक लाभ भी हासिल किए जा सकते हैं। सामाजिक परिवर्तन, प्रवास और जातीय विविधता वाली इस दुनिया में, एएलई सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा दे सकता है तथा सहनशीलता और आस्था रखने वाले समाज को प्रोत्साहित कर सकता है। यह लोगों को राजनैतिक क्षेत्र में भाग लेने के लिए आवश्यक क्षमता और जानकारी भी प्रदान करता है।

66% देशों ने कहा कि साक्षरता कार्यक्रमों ने लोकतांत्रिक मूल्यों, शांतिपूर्ण समरसता और सामुदायिक एकजुटता को विकसित करने में मदद की है।

गराले III सर्वेक्षण में प्रतिक्रिया देने वाले दो-तिहाई देशों ने कहा कि साक्षरता कार्यक्रमों ने लोकतांत्रिक मूल्यों, शांतिपूर्ण समरसता और सामुदायिक एकजुटता विकसित करने में मदद की। एएलई वंचित जनसंख्या को सशक्त बनाने और उनके सामाजिक संबंधों में सुधार ला सकता है। इससे यह उन्हें व्यापक समुदाय और श्रम बाजार से जोड़ने में मदद करता है और साथ ही सामाजिक एकीकरण को प्रोत्साहन मिलता है। शैक्षिक नगर बनाने पर 2013 बेजिंग घोषणा की मान्यता के अनुसार एएलई से 'शैक्षिक समुदायों' और 'शैक्षणिक नगरों' का विकास हो सकता है जो पर्यावरण स्थिरता जैसी प्रमुख चुनौतियों का समाधान निकालने में अधिक सक्षम हो सकते हैं।

सामाजिक और सामुदायिक विकास मुख्यत: महिलाओं की क्षमताओं पर निर्भर करता है। यूनेस्को ने अनुमान लगाया है कि 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की 481 मिलियन महिलाओं में अभी भी बुनियादी साक्षरता कौशल की कमी है, और उप-सहारा अफ्रीका में केवल दो-तिहाई युवतियां ही साक्षर हैं। महिलाओं के पास एएलई कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए अभी भी पर्याप्त अवसर मौजूद नहीं हैं। कार्यस्थल में, उन्हें आगे और कौशल प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए कम अवसर दिए जाते हैं, और उनकी क्षमताओं का उचित प्रकार से मूल्यांकन नहीं किया जाता है। एएलई स्त्री-पुरुष समानता के मुद्दों पर लड़कों ओर पुरुषों को जागरूक बना सकता है तथा इसे हासिल करने के लिए वे कार्रवाई कर सकते हैं।

सर्वाधिक उपेक्षित, वंचित और सबसे गरीब लोगों को निश्चित रूप से एएलई के कार्यकलापों में शामिल नहीं किया जाता। विकलांग लोगों, असाध्य रोगों या शिक्षा ग्रहण करने में कठिनाई वाले लोगों के लिए एएलई कार्यक्रमों का लाभ उठाना मुश्किल समझा जाता है।

स्थायी विकास एजेंडा 2030 सरकारों को सामाजिक बदलाव के लिए एएलई में एक नया राजनैतिक पहलू उपलब्ध कराता है। स्थायी विकास लक्ष्य 4, लक्ष्य 4.7 का यहां विशेष रूप से प्रासंगिक है (देखें बॉक्स 2)।

बॉक्स 2
स्थायी विकास लक्ष्य 4, लक्ष्य 4.7

"2030 तक सुनिश्चित करें कि सभी सीखने वाले लोग स्थायी विकास को बढ़ावा देने हेतु ज्ञान और कौशल को प्राप्त कर लें जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ स्थायी विकास और स्थायी जीवन शैली संबंधी शिक्षा, मानवाधिकार, स्त्री-पुरुष समानता, शांति और अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देना, वैश्विक नागरिकता, स्थायी विकास हेतु सांस्कृतिक विविधता को महत्व देना तथा स्थायी विकास में संस्कृति का योगदान शामिल हो।"

अनेक देशों में, नीतिगत दिशा-निर्देशों में सक्रिय नागरिकता और सामाजिक समावेश को प्रोत्साहित करने के लिए एएलई के महत्व को मान्यता दी जाती है। तथापि, नीतियों में प्राय: आर्थिक उद्देश्यों, अनौपचारिक एएलई की तुलना में औपचारिक एएलई और श्रम बाजार परिणामों को प्राथमिकता दी जाती है, जिनका वास्तविक समुदाय परिणामों पर कम प्रभाव पड़ने की संभावना होती है।

11.
एएलई के भविष्य के लिए सबक और रुझान

गराले III सर्वेक्षण में सुझाव दिया गया है कि देश एएलई पर प्रगति कर रहे हैं। हालांकि यह प्रगति असमान और अनिश्चित है।

साक्षरता, जो शिक्षा के अधिकार का एक भाग है तथा आजीवन शिक्षा का आधार है, एक प्रमुख वैश्विक चुनौती बना हुआ है। लगभग 758 मिलियन वयस्क आज भी पढ़ और लिख नहीं सकते। वर्ष 2000 में 73 देशों में से केवल 17 देश, जिनकी साक्षरता दर 95% से कम थी, वर्ष 2015 तक वयस्क साक्षरता में सुधार के अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्य को 50% तक प्राप्त कर सके थे।

गराले III सर्वेक्षण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले बड़ी संख्या में देशों ने न्यून बुनियादी कौशल वाले वयस्कों की उनके एएलई कार्यक्रमों की मुख्य लक्षित समूह के रूप में पहचान की। इसके लिए वैश्विक स्तर पर भी निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। यूनेस्को आजीवन शिक्षा फेमवर्क में साक्षरता के लिए वैश्विक गठबंधन शुरू कर रहा है जो विविध जनता और निजी कार्यकर्ताओं को स्थायी विकास लक्ष्य 4 के लिए निर्धारित नए साक्षरता लक्ष्य के प्रति एकजुट करेगा। इस दौरान, साक्षरता की उभरती अवधारणा से पता चलता है कि विभिन्न स्तरों पर लोग साक्षर हैं। इसलिए वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी सिफारिशों में यह तर्क दिया गया है कि एएलई को शिक्षा और दक्षता स्तर को बनाए रखने सहित वयस्कों को निरंतर समर्थन देना चाहिए।

शिक्षा में स्त्री-पुरुष असमानता स्थायी विकास में एक बड़ी बाधा बनी हुई है। लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ हिंसा विद्यमान है। महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर भेदभाव एक समस्या है जो उन्हें सीधे तौर पर प्रभावित करती है, लेकिन इसका यह भी अर्थ है कि उनके परिवार, समुदाय और समाज उनकी शिक्षा से लाभान्वित नहीं हो सकते।

एएलई पर आंकड़ों का संग्रह कई देशों में सुधर रहा है। *गराले III* सर्वेक्षण में, पांच देशों में से चार देशों ने सूचित किया कि उन्होंने 2009 के बाद से एएलई की निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए अधिक प्रभावी प्रणाली विकसित की है। हालांकि स्वत: सूचित आंकड़ों से एएलई पर आगे कोई ठोस साक्ष्य मिलना मुश्किल है। चुनौती यह है कि एएलई उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी कई सार्वजनिक संस्थानों और निजी कार्यकर्ताओं द्वारा साझा की जाती है। इसके अलावा, गैर-औपचारिक और औपचारिक परिवेश में होने वाली एएलई की मात्रा की सीमा बताना कठिन है।

12.
स्थायी विकास के लिए 2030 एजेंडा में एएलई

स्थायी विकास एजेंडा 2030 और शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क फॉर एक्शन ने एएलई को गरीबी का उन्मूलन करने, अधिक समानता वाले समाज को प्रोत्साहित करने तथा स्थायी विकास को बढ़ावा देने के लिए सुदृढ़ता से स्थापित किया है। उन्होंने विशेष रूप से वयस्कों की शिक्षा ग्रहण करने वालों के रूप में पहचान की है। अनेक स्थायी विकास लक्ष्यों में एएलई में सुधार करने की स्पष्ट रूप से मांग की गई है। इन लक्ष्यों में वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी सिफारिशों उल्लिखित शिक्षा के सभी तीन पहलुओं: साक्षरता; सतत् प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास; तथा सक्रिय नागरिकता को शामिल किया गया है। विकास के लिए 2030 एजेंडा में एएलई पर मिलेनियम विकास लक्ष्यों की तुलना में अधिक ध्यान दिया गया है और इसके प्रभाव का विशिष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। इसका आज और 2030 के बीच एएलई में परिवर्तन चाहने वाले देशों को पर निम्नलिखित नीतिगत प्रभाव पड़ेगा:

1. एएलई सहित शिक्षा एक मूलभूत और समर्थ बनाने वाला मानवाधिकार है। एएलई के लिए इस अधिकार को साकार करने की चुनौती यह है कि प्रारंभिक स्कूली शिक्षा से भिन्न इसमें एएलई की मुफ्त और अनिवार्य दोनों रूप में परिकल्पना करना कठिन है। इसके बावजूद, देशों को यह सुनिश्चित करना होगा कि लोगों की उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षा अवसरों तक प्रभावी पहुंच है। यहां प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करने का अर्थ वयस्कों को अवसरों के बारे में पर्याप्त रूप से सूचित करना, तथा उन्हें वित्तीय तथा सहायता के अन्य तरीके उपलब्ध कराना है ताकि वे इन अवसरों का लाभ उठा सकें।
2. एएलई आजीवन संतुलित शिक्षा पाठ्यक्रम का भाग है। आजीवन शिक्षा की अवधारणा, जीवन के शुरुआती वर्षों में हाल के रुझानों (और निवेश में) पर ध्यान देती है। वर्तमान में किया जाने वाला व्यय स्कूल छोड़ने वाले 120 मिलियन बच्चों और किशोरों तथा कई वयस्कों, जो अपने कौशल को अपने कार्य स्थलों और समुदायों में अद्यतन बनाना चाहते हैं, की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा।
3. एएलई सामूहिक, अंतर-क्षेत्रीय एजेंडा का एक हिस्सा है। विभिन्न नीतियों और पद्धतियों पर अलग-अलग चर्चा नहीं की जा सकती। श्रम बाजार में मतभेद जैसी बाधाओं से तभी पार पाया जा सकता है यदि एएलई और अन्य नीतिगत पहलुओं पर संयुक्त रूप से विचार किया जाए। देश बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता को पहचानते हैं, लेकिन विभिन्न क्षेत्र अपने हितों को निरंतर बचाए रखना चाहते हैं, जबकि प्रशासनिक नियम बहु-क्षेत्रों में परस्पर वित्त-पोषण की अनुमति नहीं देते।

80% देशों ने सूचित किया कि उन्होंने 2009 के बाद से एएलई की निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए अधिक प्रभावी प्रणाली विकसित की है।

4. विविध शेयरधारकों में अधिक सहयोग करने की आवश्यकता है। यह एएलई के लिए भी विशेष रूप से सत्य है, जहां कार्यक्रमों के प्रावधान और वित्त-पोषण में कार्यकर्ताओं की सबसे व्यापक संभव रेंज शामिल होती है, जिसमें सरकारें, निजी प्रदायक, कर्मचारी, नागरिक समाज संगठन तथा शिक्षक शामिल होते हैं।

5. एएलई को नवीनतम आंकड़ों का हिस्सा बनने की आवश्यकता है। शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क फॉर एक्शन में शिक्षा में बेहतर निगरानी और रिपोर्टिंग तथा नीतियों में सुधार करने के लिए 'अनुसंधान और मूल्यांकन संस्कृति' की मांग की गई है। यह एएलई के लिए एक विशेष चुनौती होगी, जहां ज्ञान का आधार उच्च आय वाले देशों में भी कमजोर होता है। आंकड़ों में सुधार लाने के किसी भी प्रयास के लिए उपलब्ध संसाधनों पर विचार करना होगा और प्राथमिकताओं को सावधानीपूर्वक निर्धारित करना होगा।

एएलई को नवीनतम आंकड़ों का हिस्सा बनने की आवश्यकता है।

कई स्थायी विकास लक्ष्यों पर एएलई का प्रभाव पड़ा है जिसमें लक्ष्य 3 (स्वास्थ्य पर), लक्ष्य 5 (स्त्री-पुरुष समानता पर), लक्ष्य 8 (कार्यशील दुनिया पर) और लक्ष्य 11 (नगरों के पुनरुत्थान पर)। स्थायी विकास लक्ष्य 4 विशेष रूप से शिक्षा और आजीवन शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करता है: जिसका उद्देश्य 'समग्र और समान गुणवत्ता शिक्षा' सुनिश्चित करना तथा सभी के लिए आजीवन शिक्षा अवसरों को प्रोत्साहित करना है। स्थायी विकास लक्ष्य 4 के अंतर्गत सात लक्ष्यों में से निम्नलिखित पांच लक्ष्य सीधे तौर पर एएलई से संबंधित हैं:

- लक्ष्य 4.3 में देशों से तकनीकी, व्यावसायिक और उच्च स्तरीय शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया है।
- लक्ष्य 4.4 में देशों से और अधिक लोगों को कौशल प्रदान करने का आग्रह किया गया है ताकि वे बेहतर नौकरी प्राप्त कर सकें।
- लक्ष्य 4.5 में देशों से शिक्षा में स्त्री-पुरुष असमानता को दूर करने के लिए आह्वान किया गया है।
- लक्ष्य 4.6 में देशों से यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि सभी युवा और पर्याप्त मात्रा में वयस्क साक्षरता और अंक ज्ञान प्राप्त कर लें।
- लक्ष्य 4.7 में स्थायी विकास के लिए शिक्षा, मानवाधिकारों, स्त्री-पुरुष समानता, शांति और वैश्विक नागरिकता को शामिल किया गया है।

गराले समुदाय में भाग लें

गराले, एएलई में उत्कृष्ट पद्धति का कोई एक मॉडल उपलब्ध कराने का प्रयास नहीं करता। हालांकि इसमें सभी देशों से आजीवन शिक्षा के सिद्धांत को अमल में लाने के लिए तत्काल कार्रवाई करने का आह्वान किया गया है। पाठकों को रिपोर्ट में प्रस्तुत साक्ष्यों और विश्लेषणों पर गहरा मंथन करने तथा प्रस्तुत किए जाने वाले विचारों और नवीन मामलों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पाठकों से वेबसाइट (http://uil.unesco.org/grale) देखने का भी आग्रह किया जाता है। यह साइट *गराले III* के सर्वेक्षण पर आधारित है जो एएलई पर बड़ी संख्या में आंकड़े प्रस्तुत करती है। देश अपनी प्रगति की निगरानी कर सकते हैं और अपने अनुभवों की सहयोगी देशों के साथ तुलना कर सकते हैं। विश्लेषक एएलई की वैश्विक स्थिति की पूरी तस्वीर बनाने के लिए आंकड़ों की जांच कर सकते हैं। कनफाइनटिया VI की मध्यावधि समीक्षा में इस बात पर विचार किया जाएगा कि *गराले* आने वाले वर्षों में प्रगति की कैसे बेहतर ढंग से समीक्षा कर सकता है। चुनौती यह होगी कि एक एकीकृत दृष्टिकोण विकसित किया जाए जिसमें वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने (2015) संबंधी सिफारिश, स्थायी विकास एजेंडा 2030, शिक्षा 2030 फेमवर्क फॉर एक्शन तथा बेलेम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन में की गई प्रतिबद्धताएं शामिल हों। *गराले IV*, जो 2019 में प्रकाशित होना है, में उन संकेतकों पर ध्यान दिया जाएगा जो एएलई तथा आजीवन शिक्षा की बेहतर निगरानी और मूल्यांकन की अनुमति देते हैं। यूनेस्को आजीवन शिक्षा संस्थान गराले IV को तैयार करने की पूरी प्रक्रिया में पाठकों और भागीदारों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने की अपेक्षा करता है।

वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने संबंधी तृतीय वैश्विक रिपोर्ट (गराले ।।।) में *वयस्कों को सिखाने और पढ़ाने* (एएलई) की वैश्विक स्थिति की विविध तस्वीर प्रस्तुत करने के लिए 139 सदस्य देशों द्वारा पूरे किए गए निगरानी सर्वेक्षणों की रूपरेखा दी गई है। इसमें बेलेम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन, जिसे 2009 में वयस्क शिक्षा पर छठे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अपनाया गया था, के संबंध में देशों द्वारा की गई प्रतिबद्धता को पूरा करने में हुई प्रगति का मूल्यांकन किया गया है। इसके अलावा, रिपोर्ट में तीन प्रमुख क्षेत्रों: स्वास्थ्य एवं कल्याण; रोजगार और श्रम बाज़ार; और सामाजिक, नागरिक और सामुदायिक जीवन पर एएलई के प्रभाव की जांच की गई है। *गराले ।।।* में नीति-निर्माताओं, शोध कर्ताओं और प्रेक्टिशनरों के लिए इन सभी क्षेत्रों में एएलई के व्यापक लाभ के ठोस साक्ष्य प्रदान किए गए हैं। ऐसा करते समय इसमें एएलई के कुछेक प्रमुख योगदानों का उल्लेख किया गया है जो स्थायी विकास एजेंडा 2030 को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

UNESCO Institute
for Lifelong Learning